Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2022 SHISRRJ | Volume 5 | Issue 3 | ISSN : 2581- 6306

कामकाजी स्त्री आ दांपत्य जीवन

श्रवण कुमार

ओल्ड पी.जी. कैम्पस, तिलकामाँझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर

Article Info
Volume 5, Issue 3
Page Number : 128-133

Publication Issue :
May-June-2022

Article History
Accepted : 01 May 2022
Published : 30 May 2022

दांपत्य जीवन पारिवारिक जीवनक मूल आधार अछि। दांपत्ये ओ मूल बिंदु अछि जतय सब संबंधक रेखा आबि कऽ कतहु ने कतहु मिलैत अछि। भारतीय समाजमे दांपत्यक आधारशिला प्रेम अछि। दांपत्यक विशिष्टता पति–पत्नीक परस्पर प्रेम, समर्पण, त्याग आ उदारतामे रहैत अछि। विवाह बंधनक परिकल्पना जन्म–जन्मांतरक अटूट संबंधमे कयल जाइत अछि। विवाहित जीवनक अर्थ अछि जे पति–पत्नी एक दोसरकेँ समझथि, बुझथि, परस्पर प्रेम करथि। दांपत्य जीवनक अपन सुख अछि जे असीम अछि। शारीरिक, मानसिक तृप्ति, परस्पर सौहार्द, परस्पर सम्मानक भावना, विश्वास, सहानुभूति आ समानधर्मिता ई सब दांपत्य जीवनक महत्वपूर्ण तत्व अछि। मधुर दांपत्य जीवनक लेल पति–पत्नी दुनूकेँ आपसमे समझबाक, बुझबाक आवश्यकता होइत अछि। एहि कारणसँ गैर कामकाजी स्त्री आ अशिक्षित स्त्री सेहो मधुर दांपत्य जीवन भोगैत अछि। एकर विपरीत आत्मनिर्भर, सुशिक्षित स्त्री बेसी प्रयास कयलोपर मधुर दांपत्य जीवन बिताबऽमे विफल भऽ जाइत छथि। खाली शिक्षा आ धनेसँ सुखी दांपत्य जीवन नहि बितायल जा सकैत अछि। पति–पत्नीक नित्य कलहसँ कतेको समस्याक जन्म होइत अछि। एकरासँ संपूर्ण जीवनक नैया डगमगाय लगैत अछि। समयक साथ परिवर्तित समाजमे विवाहक मंगलमय स्वरूप कतेक अंशमे बदलि चुकल अछि। सिंदूर जे सौभाग्यक आ अक्षय पतिव्रताक चिन्ह बुझल जाइत अछि, आजुक समयमे अपन अर्थक अवस्थासँ क्षीण भऽ रहल अछि।

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

आइ विवाहक आधार भावनात्मक संवेदना युग–युगकेँ संबंधक धार्मिक आस्था आ विश्वास नहि अछि। एकर परिणामस्वरूप पति–पत्नी दू टा विभिन्न इकाई बनि कऽ अपन–अपन हितमे हेरा कऽ अपन व्यक्तिगत खुशी पयबाक होड़मे एक–दोसराकेँ बाधित करैत छथि। एहि संबंधमे तनाव उत्पन्न होइत अछि आ दांपत्यक जे प्रभाव अछि से क्षीण होइत अछि।

पुरुषक जीवन संघर्षसँ आरंभ होइत अछि आ स्त्रीक आत्मसमर्पणसँ मुदा आधुनिक स्त्री सभकेँ संघर्षो करय पड़ैत अछि आ समर्पणो। एहिसँ स्त्रीक सामने कतेको समस्या ठाढ़ भऽ होइत अछि। दोसर भूमिका निभैतो जीवनमे संघर्ष करय पड़ैत अछि। जतय विवाह आत्मत्याग आ सहयोगक मांग करैत अछि ओतय काम–काज आत्मोन्नती आ प्रतिस्पर्धा विवाहित जीवनमे सामंजस्य आ समर्पण खाली स्त्रियेसँ अपेक्षित अछि। कामकाजी दांपत्य संबंधकेँ पूर्ण रूपसँ परिवर्तित करैबाला तत्व नहि अछि। कोनो ने कोनो अंशसँ दांपत्य संबंधकेँ प्रभावित अवश्ये करैत अछि। ई प्रभाव अनुकूलो भऽ सकैत अछि आ प्रतिकूल सेहो। दोहरा जिम्मेदारी खाली चिंते नहि उत्पन्न करैत अछि बल्कि ई चिंता स्वयं एकटा समस्याक रूप धारण करैत अछि। कामकाजी स्त्री सभक सामने समाजमे एक टा निश्चित 'लेवल' बना कऽ रखबाक लेल व्यक्तिगत टकरावक समस्या सेहो भऽ जाइत अछि। ई समस्या गैर कामकाजी स्त्री सभक सामने नहि होइत अछि। एहि लेल कामकाजी स्त्रीक आदर्शवादी आ मधुर एकनिष्ठ प्रेमसँ भरल दांपत्य जीवनक विवेचन गैर कामकाजी स्त्रीसँ भिन्न संदर्भ आ परिस्थितिमे करब आवश्यक अछि। कतेको उपन्यास, कथा सभक अध्ययन कयलापर ई तथ्य सोझा आबैत अछि जे कामकाजी स्त्री सभक दांपत्य संबंध असमंजसक दायरामे अछि। कतहु पति–पत्नीक आपसी संबंधमे दूरीक विस्तार भऽ रहल अछि तऽ कतहु संग रहलोपर खाली पति–पत्नीक विवशताक निभाबै लेल बाधित अछि। कतहु–कतहु पति–पत्नीमे तनावक स्थितिकेँ आधार बनाओल गेल अछि। किछु एहि कारणेँ वैवाहिक संबंध टूटि चुकल अछि। आजुक पुरुष स्त्रीक एम्हरसँ पूरा समर्पणेँ चाहैत अछि आ अपन समाजमे स्तर ऊँच करबाक लेल ईहो सोचैत अछि जे पत्नियो बाहर जा कऽ किछु काज करए। एहि दोहरी मानसिकता कारणेँ आ स्त्रीक दोहरी जिंदगीक कारणेँ दांपत्य जीवन पीसा रहल अछि।

दोसर तरहेँ देखी तऽ कहि सकै छी जे सुखमय दांपत्य जीवनक आधारशिला प्रेमे टा रहल अछि। सुखमय दांपत्य जीवन–यापनक लेल अर्थ, धर्म, काम तीनूक समन्वय होयबाक चाही। एहि तीनूक दांपत्य जीवनमे समन्वय तखने संभव अछि जखन पति–पत्नी एक–दोसराक इच्छानुसार चलथि। सुखी दांपत्य जीवन बितेबाक लेल आमदनी, शिक्षा, नौकरी, घरेलू उत्तरदायित्व, संयुक्त

परिवारक अपेक्षा पति–पत्नीक एक–दोसराक प्रति उदार दृष्टिकोण होयबाक बेसी जरूरत अछि। कामकाजी स्त्रीक दांपत्य जीवनमे मधुरता तखन धरि रहैत अछि जखन धरि कामकाजी स्त्री घरमे पारंपरिक पत्नीक भूमिका पूर्णरूपेँ निभाबैत छथि। जँ पति–पत्नी एक–दोसराक कर्तव्यकेँ नीक जकाँ जानि लथि तऽ हुनक जीवनमे समस्या नहि उठि सकैत अछि।

किछु उपन्यास पढ़बाक क्रममे दांपत्य जीवनक चित्रण किछु एहि प्रकारेँ देखबामे आयल–

'परसों के बाद' उपन्यासमे माधवीक जीवन बड़ सुखमय रहल अछि कियाक तऽ ओ अपन पतिक विचारक समर्थन करैत छलीह आ हुनक भावनाक आदर करैत छलीह। ओकर मुख्य सहयोग तऽ एतबे छल जे ओ अपन पतिक भावनाकेँ समझैत आ हुनक विचारकेँ समर्थन करैत छलीह। माधवी अपन नौकरीक अतिरिक्त अपन पतिकेँ कार्यमे सहयोग करैत रहलीह। एहिसँ हुनक जीवनमे कखनो संघर्ष नहि भेलनि। हुनक जीवन सदिखनं सुखमय बीतल।

एकटा दोसर उपन्यास 'अपने अपने कर्णक'मे देखलहुँ जे नायिका कुनी प्रौढ़ावस्थामे विवाह करैत छथि। कुनी घरक सब टा जिम्मेदारी अपने लऽ लैत अछि। ओकर मौसी अपन सखीक बेटा अनिरूद्धसँ हुनक विवाह करबैत छथि। अनिरूद्ध विधुर छलाह। हुनका दू टा बच्चा छलनि। सिद्धार्थ कुनीक प्रेमी छलथि। सिद्धार्थकेँ बिसरि अनिरूद्धक प्रति समर्पित होयब, कुनीक लेल आसान नहि छलनि। ओ सब किछु बिसरि अनिरूद्धक पत्नी बनि जाइत छथि। अनिरूद्ध सेहो कुनीक आदर करैत छथि। पुरुष स्त्रीकेँ आदर दय प्यार आ विवेकसँ हुनक चारू कात लत्ती जकाँ लपटा जाइत अछि। एहि तरहेँ कुनी सेहो हुनक पत्नी बनि हुनक भऽ जाइत छथि आ हुनक बच्चो सबकेँ अपनाबैत छथि आ माय जकाँ प्यार दैत छथि। एहि तरहेँ दुनू एक–दोसराकेँ समझि–बुझि सुखी दांपत्य जीवन बितबैत छथि।

'शेष यात्रा' उपन्यासमे अनु आ प्रणव छथि जनिक प्रारंभिक जीवन बड़ सुखमय छलनि। पार्टी सबमे जे सब देखैत छलनि से हुनका 'गोल्डन कपल' नामसँ जानैत छलनि। हुनक दुनूक जीवन देखि कऽ हुनक नहिराक स्त्री लोकनि हुनक भाग्यकेँ सराहैत छलीह। किछु दिन बाद अनु प्रणवसँ अलग भऽ गेलीह आ तकर बाद डॉक्टर बनलीह। दीपांकर अनुक प्रेमी छलाह। ओ विद्यार्थीये जीवनसँ अनुकेँ चाहैत छलाह। जखन अनुक वियाह प्रणवसँ भेलनि तऽ ओ बड़ विचलित रहैत छलीह। किछु दिन बाद जखन हुनका अनुकेँ प्रणवसँ अलग होयबाक बात बुझबामे आयल तखन बड़ खुश भेलाह। किछु दिन बाद अनु आ दीपांकर विवाह कयलनि। तखन दुनू मिलि सुखमय दांपत्य जीवन बितौलाह।

परिवारमे पति–पत्नी दुनू नौकरी करैत छथि तऽ घरक जिम्मेदारी लेल किछु समस्या ठाढ़ होइत अछि। नौकरीक संग पत्नीकेँ घरक सेहो सब टा भार उठाबऽ पड़ैत छनि। जँ पति समझदार छथि तऽ ओ घरक सभ काजमे पत्नीक सहयोग जरूर करैत छथि। तखन दुनूक जीवन सुखमय चलि सकैत छनि। पतिक सहयोगसँ पत्नी अपन सब थकानकेँ बिसरि जाइत छथि। जखन एकर विपरीत जँ सहयोग नहि मिलैत अछि तऽ तनाव आ बाहरक थकानसँ पत्नी टूटि जाइत छथि।

'उम्र एक गलियारे की' एहि उपन्यासमे देखने रही जे देवकी नामक स्त्री जिनक दांपत्य जीवन कतेक सुखमय छलनि। देवकी बाल रोग डॉक्टर छलीह। हुनक पति सुधीर सेहो डॉक्टर छलाह। अंतर्जातीय प्रेम विवाह कयने छलाह। देवकीकेँ विजातीय लड़कासँ विवाहक कारणेँ बाप–बेटीक संबंध टूटि जाइत छनि। ओ पति सुधीरसँ बड़ प्रेम करैत छलीह। पतिक अपमान ओ सहि नहि सकलीह। एहि लेल ओ बियाहक बाद कहियो अपन पिताक घर नहि गेलीह। देवकी अपन बहिनसँ कहैत छथिन हम सब किछु सहन करि सकैत छी मुदा सुधीरक अपमान नहि सहि सकैत छी। ओ पितासँ बड़ डरि गेल छलीह। तखन बहिन हुनकासँ पुछैत अछि जे पाहुनकेँ तो बहुत चाहैत छीही। देवकी कहैत अछि जे ईहो कोनो पुछबाक गप अछि मुदा हुनका हम ओतेक नहि चाहैत छी जतेक ओ हमरा चाहैत छथि। जानैत छी ओ हमरा लेल अपन कतेको रूचि सब छोड़ि देलाह। हम शाकाहारी छी तऽ ओ हमरा लेल शाकाहारी भऽ गेलाह। ओ हमरा कोनो बातक लेल 'फोर्स' धरि नहि कयलनि। पति–पत्नीकेँ एक–दोसराकेँ समझबाक समझबाक महत्वपूर्ण अछि। हुनका दुनूक समझदारियेक कारण हुनक जीवन सुखमय रहल। कामकाजी स्त्री घर आ बाहर दुनू दिस संघर्ष करैत आगू बढ़ैत छथि। कखनो–कखनो घरक दायित्वसँ बेसी कार्यक्षेत्रीय दायित्व महत्वपूर्ण होइत अछि। एहन समयमे पतिक कर्तव्य हेबाक चाही जे पत्नीकेँ काजमे मददि करनाइ, हुनका प्रोत्साहित करनाइ आ हुनक सुख–दुखक भागी बननाइ। कार्यक्षेत्रसँ थाकि–हार आयल पत्नीकेँ पतिक टू टा मीठ बाते ओहि समयमे स्वर्गक सुख दैत अछि।

एकर सभक विपरीत जखन हम दोसर पक्ष दुखमय दांपत्य जीवन दिस देखैत छी तऽ बहुतो तरहक बात बुझबामे आबैत अछि। साधारण रुपेँ देखैत छी तऽ दांपत्य जीवन एक टा एहन फुलवारी अछि जाहिमे सुख रूपी फूलक साथ दुख रूपी काँटो अछि। एहि लेल महापुरुष सब पहिने कहने छथि जे जीवन फूलक शैया नहि, एतय कांटोमे वास करै पड़ैत अछि। जेना–जेना मनुष्य विकासक पायदानपर चढ़ैत गेल तेना–तेना जीवनक मूल्यो बदलैत गेल। रोटी, कपड़ा, मकान पहिने मनुष्यक

मूलभूत आवश्यकता छल परन्तु वर्तमान कंप्यूटर युगमे मनुष्यक एहि मूलभूत आवश्यकतापर आधुनिकता एहि तरहेँ हावी भेल जे आब जीवन जीबाक शैलिये बदलि गेल। एहि बदलावक प्रभाव स्त्री पुरुष दुनूपर पड़ल। एहि लेल दुनूक अतृप्त आत्मा भौतिक सुखमे वृद्धि करबाक उद्देश्यसँ दांपत्यक सुखसँ वंचित भऽ रहल अछि। विचारक सभ्यता सेहो ओहिमे दूरी स्थापित कऽ रहल अछि।

पति–पत्नी दुनू आर्थिक स्वतंत्रता चाहैत अछि। परिणामस्वरूप दुखे–दुख जीवनमे देखाय लागै छै। एहन धनक की लाभ जाहिसँ आत्माक क्षति होय। आइ–काल्हि पति–पत्नी एहि स्थितिकेँ बढ़ियासँ समझै तऽ ओकर दांपत्य जीवनक उद्धार भऽ सकैत अछि। समय परिवर्तनक साथे–साथ मनुष्यक सोझा नव–नव समस्या अभरैत अछि। आधुनिकीकरणसँ जीवन यांत्रिक आओर निराश भऽ गेल अछि जाहिसँ दुखक नव कारण सब सोझा आयल जेना – अस्वास्थता, तनाव, अर्थसंकट, अनमेल विवाह, अविश्वास, संदेह जे सब दांपत्य जीवनक विघटनकारी तत्व अछि।

महिला सबकेँ दोहरा जिम्मेदारी निर्वाह करैत अनेक तरहक मुसीबत के सामना करय पड़ैत अछि आ ओ करितो अछि। कामकाजी स्त्री सभक व्यक्तित्व 2 खंडमे विभाजित होयबाक कारणेँ हुनका सभकेँ मानसिक तनाव सेहो झेलय पड़ैत अछि। परिवारक सभ व्यक्ति ई आशा करैत अछि जे ओ परंपरागत रूपमे पत्नी, बहु, भौजाई, बेटी सभक दायित्व निभाबथि। एहि लेल पतियो सभकेँ समझौता कऽ लेबाक चाही। पति–पत्नी नौकरीकेँ कोन तरहेँ देखैत अछि, संबंध बिगाड़बाक सँवारबाक अधिकतर बात ओकरेपर निर्भर करैत अछि। पतिकेँ परंपरासँ मिलल अधिकार आ पत्नीकेँ अर्थोपार्जनसँ मिलल अहं दुनूकेँ संबंधक टकराव कारण होइत अछि। अहंभाव स्वाभिमानक स्तर धरि उचित अछि मुदा जहिना अहंकारक श्रेणीमे आबैत अछि ओ बुराईक रूपमे बदलि जाइत अछि। यदि अहंभाव आवश्यकतासँ बेसी बढ़ि जाइत अछि ओकर गलत असर दांपत्य जीवनपर पड़ैत अछि। घरमे पतिक अधिकार चलैत अछि। ओ स्त्रीकेँ अपनासँ श्रेष्ठ पद आ स्थितिमे नहि देखऽ चाहैत अछि। एहि सभसँ दुनूकं बीच बड़ तनावक स्थिति रहैत अछि। एहि तरहेँ देखैत छी जे आधुनिक युगमे स्त्री स्वयं अपन लड़ाई लड़बाक शक्तिसँ युक्त भऽ रहल अछि। आजुक स्त्री अपन अधिकार स्वयं प्राप्त करबाक लेल संघर्ष करैत अछि।

एकर सभक बीच एक टा आओर बात जे दुखक मुख्य कारण अविश्वास आ संदेह होइत अछि। एक बेर मस्तिष्कमे अविश्वास जँ घुसि गेल तऽ ओ मन संक्रमित भऽ जाइत अछि। ओकर बाद लाख शपथ, सफाई, प्रमाण ओकरा दूर नहि कऽ पाबैत अछि। पति पत्नीक मनमे संदेह कनिको होइत

अछि तऽ दांपत्य जीवनमे एकर अधिक प्रभाव देखबामे आबैत अछि। तनावग्रस्त दांपत्य जीवनसँ छुटकारा लेल कामकाजी स्त्री संबंध विच्छेद आ पतिक साथ रहलोपर मानसिक दूरी चाहय लागैत अछि। एहि सभक लेल पश्चाताप करैबाली स्त्री पुरुषक संख्या बड़ कम अछि। जे कामकाजी स्त्री पुरुष तनावग्रस्त संबंधकेँ पुनः परीक्षण कऽ अपन दोष देखबाक प्रयास करैत छथि, निश्चित रूपसँ ओ एक टा सराहनीय प्रयासक कदम अछि जाहि सभसँ विघटित दांपत्य जीवन पुनः जुड़ि सकैत अछि।

संदर्भ सूची

1. वैशाली की नगरवधू
2. परसों के बाद
3. अपने–अपने कनक
4. शेष यात्रा
5. उम्र एक गलियारे की